पू.मुनिश्री पुण्योदयविजयजी म.सा. की

जीवन झांकी

–: लेखक :–

मरुधर रत्न पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

जिनशासन के महान् ज्योतिर्धर स्व. पूज्यपाद आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

बंधु बेलडी

पुण्यनिधान मुनिश्री पुण्योदयविजयजी म.सा.

प्रशांतमूर्ति मुनिश्री विमलप्रभविजयजी म.सा.

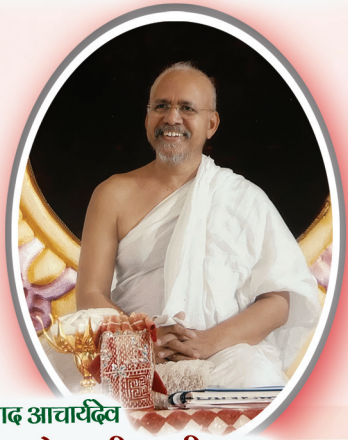

पुस्तक लेखक–
मरुधररत्न पूज्यपाद आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

बंधु-बेलडी

मरुभूमि में विहार करते हुए

मुनिश्री पुण्योदयविजयजी म.सा.

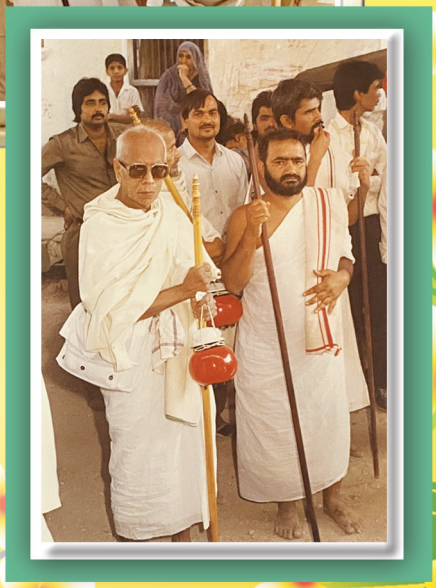

अंतिम गुरुपूजन

पालखी यात्रा

पालखी यात्रा

अग्नि संस्कार

मरुभूमि-सत्ताइस समाज रत्न, पुण्यनिधान

पूज्य मुनिश्री पुण्योदयविजयजी म. की संक्षिप्त

जीवन झांकी

✳ **लेखक-संपादक** ✳

परम शासन प्रभावक पूज्यपाद आचार्यदेव

श्रीमद् विजय **रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** के

तेजस्वी शिष्यरत्न अध्यात्मयोगी पूज्यपाद

पंन्यास प्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के कृपापात्र

चरम शिष्यरत्न मरुधर रत्न पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय

रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

234

✳ **प्रकाशक** ✳

श्री पुण्योदयविजयजी साधु-साध्वी वैयावच्च

एवं साधर्मिक भक्ति संस्था

'पुण्योत्री'–पुण्योदय धाम, शिवाजी महाराजा चोक,

At कामसेट ता. मावल जिला.पुणे Pin-410 405. (M.S.)

प्रकाशन तिथि : दि. 08-02-2023

मूल्य : पठन-पाठन

प्रकाशक की कलम से...

जैन शासन के महान् ज्योतिर्धर, महाराष्ट्र देशोद्धारक पूज्य **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा** के तेजस्वी शिष्यरत्न मरुभूमि-सत्ताइस पट्टी समाज रत्न, परमोपकारी, पुण्य निधान **पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म.** की पुण्यस्मृति में मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** एवं हृदयस्पर्शी प्रवचनकार पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय **युगचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** आदि की शुभ निश्रा में कामसेट की धन्यधरा पर **'विमल पुण्य गिरि'** पुण्यधाम में निर्मित **'शत्रुंजय महातीर्थ की प्रतिकृतिरुप'** शत्रुंजय स्थापना तीर्थ में विराजमान मूलनायक श्री आदिनाथ परमात्मा, शांतिनाथ, पुंडरिकस्वामी आदि जिनबिंबों की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर वात्सल्यमूर्ति पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म. के संक्षिप्त जीवन परिचय का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

पूज्य श्री सिरोहिया परिवार के कुलदीपक थे, पोसालिया गांव के अलंकार थे, सत्ताईस पट्टी के रत्न थे । जैन शासन के प्रभावक महापुरुष थे । निःस्पृहता, परोपकार, व्यवहार कुशलता, निर्मल ब्रह्मचर्य आदि गुणों के स्वामी थे ।

65 वर्ष के अपने दीर्घ संयम पर्याय में महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान के विविध क्षेत्रों में विचरण कर एवं छोटे-छोटे गांवों में चातुर्मास कर हजारों आत्माओं को सन्मार्ग का बोध देनेवाले, दुःखी प्राणियों को सद्बोध की राह बताने वाले पूज्य उपकारी गुरुदेवश्री के जीवन चरित्र को शब्दों के ढांचे में ढालना हमारे वश की बात नहीं है ।

फिर भी हमारी हार्दिक विनती का स्वीकार कर अध्यात्मयोगी पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के कृपा पात्र चरम शिष्यरत्न मरुधररत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** ने मनोजभाई-कर्जत, सुकनजी बाफना-कामसेट आदि से प्राप्त सामग्री के आधार पर संक्षेप में यह 'जीवन झांकी' तैयार की है । हमें विश्वास हैं कि इस लघुकाय पुस्तिका के माध्यम से विराट् व्यक्तित्व के स्वामी **पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म.** की यत्किंचित् झांकी अवश्य होगी ।

श्री पुण्योदय साधु-साध्वी वैयावच्च एवं साधर्मिक भक्ति संस्था 'पुण्योत्री' परिचय एवं उद्देश्य

परम शासन प्रभावक, दीक्षा युग प्रवर्तक पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** के तेजस्वी प्रभावक शिष्यरत्न पुण्य निधान **पूज्य मुनिराजश्री पुण्योदयविजयजी म.** खूब दीर्घदृष्टा थे, भविष्य को ध्यान में रखकर उनके सदुपदेश से **'पुण्योत्री संस्था'** का गठन हुआ था । इस संस्था में भारत भर के गुरु भक्त जुडें ।

यह संस्था चेरीटेबल रजिस्टर्ड की गई । इसके 11 ट्रस्टी बनाए गए । छह ट्रस्टी स्थानिक व 5 बाहर से लिये गए । पुण्योदय धाम के भूमिदाता, भवनदाता, भोजनशाला निर्माता और हॉल के निर्माता को स्थायी सदस्यता दी गई ।

उद्देश्य

1) विहार में अशक्त साधु-साध्वीजी के स्थिरवास की व्यवस्था एवं उनके लिए सभी प्रकार की मेडिकल व्यवस्था करना । पिछले 20 वर्षों में तीन महात्माओं का पूर्ण स्थिरवास हुआ और उनका काल धर्म इसी भूमि में हुआ ।
2) विहार में पधार रहे साधु-साध्वीजी भगवंतों के आवश्यक उपकरण-छोटी-मोटी सभी वस्तुएँ उपलब्ध कराना ।
3) कायमी भोजन शाला भी चालू है ।
4) अन्यत्र भी साधु-साध्वीजी के मेडिकल की जरुरत हो तो उसका लाभ लेना ।

वार्षिक-कार्यक्रम

1) प्रतिवर्ष पुण्योदय हील पर फागुण फेरी का आयोजन किया जाता है, जिससे आसपास से सैकडों लोग सहभागी बनते है । पिछले 11 वर्षों से पाल लगाए जाते हैं ।
2) प्रतिवर्ष कार्तिक पूनम व चैत्री पूनम को विमल पुण्य गिरि के प्रांगण में मेला लगता है व भाता दिया जाता हैं ।
3) पूज्यश्री की स्वर्गारोहण तिथि पर मेला लगता हैं ।

संक्षिप्त-जीवन झांकी

जन्म स्थल	:	पोसालिया (जिला सिरोही) राज.
जन्म तिथि	:	वि.सं. 1972 माघ वदी-2
सांसारिक नाम	:	चुन्निलाल
दादा	:	रसाजी
माता	:	धापूबाई
पिता	:	हीराचंदजी
भाई	:	ज्येष्ठ बंधु राजमल, लघुबंधु बाबुलाल
बहने	:	झमुबाई
दीक्षा तिथि	:	वि.सं. 1995 माघ शुक्ला-5
दीक्षा स्थल	:	कराड
दीक्षित नाम	:	**मुनिश्री पुण्योदयविजयजी म.सा.**
गुरुदेव	:	**प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.**
दादा गुरुदेव	:	**प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा.**
दीक्षित बंधु	:	**पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी म.सा.**
विहार क्षेत्र	:	राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र
शिष्यवत् सहयोगी	:	**पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी, पू.मु. श्री जिनसेन-विजयजी म., पू.मु. श्री प्रशांतविजयजी म.**
आजीवन अंतेवासी	:	**पू.मु. श्री जयंतरत्नविजयजी म.सा.**
कालधर्म	:	**कामसेट (महाराष्ट्र)**
कालधर्म तिथि	:	आसो वदी-5, वि.सं. 2060, दि. 2-11-2004
अग्नि संस्कार	:	आसो वदी-6, वि.सं. 2060
गुरु मंदिर	:	कामसेट, दि. 10-2-2008, वि.सं. 2064, माघ सुद-4
गुरु मंदिर	:	पोसालिया
चातुर्मास स्थल	:	राजस्थान में 28, गुजरात में 22, कर्णाटक में 1 तथा महाराष्ट्र में 16 चातुर्मास हुए ।

जन्म व बाल्यकाल

भारत की इस धन्यधरा में राजस्थान प्रांत का भी अपना गौरवपूर्ण स्थान है ।

अनेक त्यागवीर और दानवीरों जन्म देने के कारण राजस्थान की भूमि रत्नप्रसूता भी कहलाती है ।

देश की आजादी के पूर्व सिरोही स्टेट का भी गौरवपूर्ण इतिहास रहा है । विश्व प्रसिद्ध देलवाडा के मंदिर और बामणवाडजी आदि के प्रसिद्ध मंदिरों से मंडित इस धरती की प्राकृतिक संपदा भी न्यारी-निराली है ।

पार्श्वनाथ प्रभु के 108 जिनालयों में पोसालिया पार्श्वनाथ का भी अपना नाम है । वर्तमान सिरोही जिले में सिरोही शहर और शिवगंज के बीच मार्ग में आया हुआ पोसालिया गांव, जहां पोसालिया पार्श्वप्रभु का बहुत ही सुंदर जिनालय है ।

इसी पोसलिया गांव में जैनों की भी अच्छी आबादी थी । गांव में अधिकांश परिवार मध्यवर्गीय थे । खेतीबाडी व छोटा मोटा व्यापार करते थे ।

इसी गांव में शा. हीराचंदजी रासाजी सिरोहिया का परिवार रहता था । इस परिवार में भौतिक समृद्धि मध्यम होने पर भी यह परिवार दिल से अमीर था ।

बाह्य भौतिक समृद्धि के लिए जो पुण्य चाहिए, उससे भी बढकर पुण्य आत्मा की गुण समृद्धि को पाने के लिए चाहिए ।

आज कइयों के पास भौतिक समृद्धि होती है, परंतु वे दिल से खूब गरीब होते है ।

हीराचंदजी की धर्मपत्नी ने क्रमशः तीन पुत्रों को जन्म दिया था । बडे बेटे का नाम राजमल था ।

वि.सं. 1972 फाल्गुण वदी-2 के शुभ दिन धापूबाई ने अपने चारित्रनायक दूसरे पुत्र चुन्निलाल को जन्म दिया था । वि.सं. 1978 में धापूबाई ने तीसरे पुत्र को जन्म दिया था, जिसका नाम था बाबुलाल रखा गया । चुन्निलाल का बाल्यकाल पोसालिया में ही व्यतीत हुआ था ।

सिरोही से शिवगंज की ओर विहार मार्ग में पोसालिया गांव होने से कभी कभी जैन साधु-संतों का आगमन होता रहता था ।

जन्म-जन्मांतर के सुसंस्कारों के फलस्वरुप चुन्निलाल के हृदय में बचपन से ही धार्मिक रुचि जगी थी, जिसके फल स्वरुप चुन्निलाल ने कंदमूल का त्याग कर दिया था । प्रभुदर्शन, पूजा, रात्रि भोजन त्याग व नवकारसी आदि संस्कारों का सिंचन हआ था ।

चुन्निलाल का व्यवहारिक शिक्षण अपने गांव में ही हुआ था ।

मात्र 11 वर्ष की उम्र में चुन्निलाल की माँ धापूबाई का देहांत हो गया । मृत्यु की इस घटना से पहले तो चुन्निलाल को खूब आघात लगा परंतु गुरु भगवंतों के सत्संग के फलस्वरुप संसार के संबंधों की अनित्यता और आयुष्य की क्षणभंगुरता का बोध होने से माँ की मृत्यु की घटना भी उनके लिए वैराग्य का ही निमित्त बनी ।

एक बार चुन्निलाल ने घर छोडकर पूना जाकर नौकरी करने का संकल्प किया ।

यद्यपि गांव में पिताजी की दुकान थी और छह वर्षों से चुन्निलाल पिताजी को व्यवसायिक मदद करता था । पिताजी की आर्थिक स्थिति मध्यम थी-परंतु संतोषी और प्रामाणिक थे ।

सद्गुरु समागम एवं भागवती–दीक्षा

चुन्निलाल पोसालिया छोडकर पूना आया और जोयला निवासी उम्मेदमलजी पुनमचंदजी येरवडा श्रीश्रीमाल परिवार के वहां नौकरी करने लगा । बादमें बदराजजी पुनमचंदजी बाणेचा सोलंकी वहां नोकरी की ।

सद्भाग्य से उसी वर्ष वि.सं. 1993 में प्रवचन प्रभावक पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा का पूना केंप में चातुर्मास निश्चित हुआ...और एक शुभ दिन भव्य महोत्सव के साथ पूज्य आचार्य भगवंत का पुण्य नगरी पूना में चातुर्मास हेतु भव्य नगर-प्रवेश सामैया हुआ ।

स्थान स्थान पर ध्वजा-पताकाएं और तोरण बंधे हुए थे । देशी ढोल और अंग्रेजी बेंड की मधुर ध्वनि से समस्त आकाश मंडल गुंज रहा था । स्थान स्थान पर स्वागत के बेनर लगे हुए थें । सैंकडों महिलाएं मंगल कलश लेकर पूज्यश्री का स्वागत कर रही थी । ताराओं के बीच चंद्र की भांति अपने विशाल शिष्यवृंद के साथ आचार्य भगवंत सुशोभित थे ।

विशाल स्वागत यात्रा के बाद सारा जुलुस **'धर्मसभा'** के रुप में परिवर्तित हुआ ।

आचार्य भगवंत की धर्मदेशना का प्रारंभ हआ । बादल की गर्जनाओं को सुनकर जैसे मोर नाचने लगता हैं, वैसे ही पूज्य आचार्य भगवंत के उपदेश को सुनकर श्रोताओं के मस्तक डोलने लगें ।

सद्भाग्य से चुन्निलालभाई ने भी पूज्य आचार्य भगवंत की उस अमृतमय धर्मदेशना का अमीपान किया ।

पूज्य आचार्य भगवंत की देशना अर्थात् वैराग्य रस का झरणा !

जन्म-जन्मांतर की आराधना-साधना के फलस्वरुप चुन्निलालभाई को वैराग्य भरपूर धर्मदेशना में शाश्वत सत्य के दर्शन होने लगे ।

संसार की भयंकरता और संयम की भद्रंकरता का बोध होने लगा, जिसके फलस्वरुप उसे यह संसार व संसार के सारे संबंधों में अनित्यता के दर्शन होने लगे !

चुन्निलालभाई धंधे के साथ पूज्य आचार्य भगवंत की धर्मदेशना सुनने लगा । उसके परिणाम स्वरुप उसका मन वैराग्य के रंग से रंजित हो गया ।

चुन्निलालभाई का मन संसार से उठ गया । उन्होंने मनोमन दीक्षा का संकल्प किया । पूना से घर आकर पिताजी व बडे भाई से बात की, परंतु दीक्षा की बात में किसी की सहमति नहीं मिली । वे घर से भागकर पूज्य आचार्य भगवंत के पास पूना पहुँच गए ।

पिताजी को पता चलने पर वे पुना जाकर चुन्निलाल को पुनः अपने घर ले आए ।

चुन्निलाल को संसार का बंधन अखरने लगा, आखिर एक दिन पुनः साहसकर पूना में पूज्य आचार्य भगवंत विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के पास पहुँच गए और उनके सान्निध्य में रहकर धार्मिक अभ्यास के साथ संयम जीवन का प्रशिक्षण लेने लगे । मुमुक्षु चुन्निलाल ने पूज्यश्री की निश्रा में पूना से कराड तक का विहार भी किया ।

मुमुक्षु चुन्निलाल की तीव्र वैराग्य भावना और दृढ मनोबल देखकर वि.सं.1995 माघ शुक्ला पंचमी के शुभ दिन कराड में पूज्य आचार्य विजय रामचन्द्र-सूरीश्वरजी म.सा. ने भागवती दीक्षा प्रदान की ।

नूतन मुनि का नाम **मुनिश्री पुण्योदयविजयजी** रखा गया और वे पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वजी म. के 49 वें शिष्य घोषित हुए ।

बडे भाई की भागवती दीक्षा को जानकर छोटेभाई बाबुलाल का भी मन संसार से उठ गया और वह भी संयम जीवन के स्वीकार के लिए कटिबद्ध हो गया । वह भी अपने ज्येष्ठ बंधु मुनिवर तथा गुरुदेव के साथ रहकर संयम जीवन का प्रशिक्षण लेने लगा ।

वि.सं. 1996 असाढ सुदी-9 के दिन पूना में बाबुलाल की भी भागवती दीक्षा हो गई । उनका नाम मुनि श्री विमलप्रभविजयजी रखा गया और वे पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म. के सातवे शिष्यरत्न पू.मु. श्री धर्मविजयजी म. के शिष्य घोषित हुए ।

प्रवचन–प्रभावना

भागवती दीक्षा अंगीकार करने के बाद मु.श्री पुण्योदयविजयजी म. ज्ञान ध्यान की आराधना-साधना में लीन बन गए ।

भागवती-दीक्षा के बाद उनके बडी-दीक्षा के योगोद्वहन प्रारंभ हुए ।

वैशाख सुद-7 वि.सं. 1995 के शुभ दिन पूज्य आचार्य भगवंत की तारक निश्रा में नूतन मुनि की बडी दीक्षा विधि संपन्न हुई । उसके बाद गुरुकुलवास में रहते हुए नूतन मुनि ने संस्कृत-प्राकृत भाषा का बोध प्राप्त किया और प्रकरण, भाष्य, कर्मग्रंथ तथा अनेक प्रकरण ग्रंथों का स्वाध्याय भी किया ।

प्रारंभ के 10 वर्षों तक अपने गुरुदेव एवं ज्येष्ठ गुरुबंधुओं की निश्रा में रहकर कोल्हापूर, हुबली, रहमतपुर, खंभात, जामनगर, मांगरोल, अहमदाबाद, जामनगर और खंभात आदि क्षेत्रों में चातुर्मास कर जैन दर्शन एवं अन्य षड्दर्शनों का गहनतम अभ्यास कर ग्रहण शिक्षा और आसेवन शिक्षा प्राप्त की ।

दीक्षा के 7 वर्षों के बाद पू.मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. के प्रेरणादायी प्रवचन प्रारंभ हुए । 10 वर्षों के बाद चातुर्मासिक जवाबदारी भी आ पडी ।

उसके बाद गुर्वाज्ञानुसार उनके स्वतंत्र चातुर्मास प्रारंभ हुए ।

निष्कलंक चारित्र धर्म के पालन से उनकी बाह्य प्रतिभा भी निखरने लगी । वि.सं. 2005 से उनके कंधों पर चातुर्मासिक प्रवचनों की जवाबदारी आ पडी ।

लगभग 65 वर्षों तक उन्होंने यह जवाबदारी वहन की । जिसके फलस्वरुप अनेक संघों में अनेकविध आराधनाएं संपन्न हुई !

अपने नाम के अनुरुप उनका पुण्योदय भी ऐसा था कि जिसके प्रभाव से वे जहां भी जाते वहां धर्म-प्रभावना का यज्ञ प्रारंभ हो जाता था ।

वि.सं. 2005 में गुर्वाज्ञा से उन्होंने बोरसद (गुज.) में सर्व प्रथम चातुर्मास किया । उस चातुर्मास में उनके उपदेश से संघ में अपूर्व आराधना प्रभावना हुई ।

वि.सं.2006 में दहेगाम (गु.) में चातुर्मास कर खुब सुंदर धर्म प्रभावना की ।

जन्मभूमि में पदार्पण

संयम जीवन के स्वीकार के 10 वर्षों के बाद 33 वर्षीय युवा मुनि श्री पुण्योदयविजयजी म. अपने लघुबंधु युवा मुनिश्री विमलप्रभविजयजी म. के साथ अपनी जन्मभूमि पोसालिया नगर में सर्वप्रथम बाद पधार रहे थे । नगरजनों में हर्ष का पार नहीं था ।

जैनों की भांति अजैनों में भी अपार उत्साह था । सभी लोग अपने नगर से सर्व प्रथम दीक्षित बनी बंधु बेलडी के स्वागत के लिए खूब उत्सुक थे । दोनों मुनि दीक्षा के बाद प्रथम बार अपनी जन्मभूमि में चातुर्मास-वर्षावास हेतु पधार रहे थे । दोनों मुनियों के चेहरे पर ब्रह्मचर्य-संयम का अपूर्व तेज था ।

मुनिश्री पुण्योदयविजयजी की वाणी में संयम था, चातुर्य था, और धर्म की दृष्टि से अज्ञानी व बालजीवों को सन्मार्ग में जोडने की कुशलता थी ।

मारवाड की प्रजा जैन धर्म के तत्त्वज्ञान से लगभग अनभिज्ञ थी ।

श्रावक जीवन के प्राथमिक आचारों के पालन में भी वे खूब कमजोर थी ।

वीतराग प्रभु के प्रति श्रद्धावान थी परंतु उनके दर्शन-पूजन की विधि से लगभग अज्ञात थी ।

घर घर में कंदमूल-रात्रि भोजन आदि अभक्ष्य भक्षण चालू था ।

वीतराग परमात्मा को देव रुप में अवश्य मानती थी, परंतु वीतराग ही देव है, इस प्रकार की दृढ श्रद्धा में वह कमजोर थी ।

वह वीतराग को भी देव मानती थी और रागी को भी ! वह पंच महाव्रत धारी साधु को भी साधु मानती थी और महाव्रत रहित साधु संतों को भी उतना ही आदर सन्मान देती थी ।

वह वीतराग के बताए धर्म को भी धर्म मानती थी और अन्य धर्म के आचारों को भी धर्मरुप मानती थी ।

जैन प्रजा पर्वाधिराज के दिनों में वीतराग प्रभु की प्रजा करती थी तो उसके बाद गणेश, अंबा माता, अन्य देवी-देवताओं को भी उतना ही आदर-सन्मान देती थी ।

मारवाडी जैन प्रजा में धर्म के प्रति आदर-श्रद्धा थी, परंतु सत्-असत् के विवेक का सर्वथा अभाव था ।

वह जैन पर्व दिनों में आराधना-तपश्चर्या करती तो अजैनों के धार्मिक पर्वों में भी उतने ही उत्साह-उल्लास से भाग लेती थी ।

वीतराग की मूर्ति को भी आदर देती और रागी देवी-देवताओं की मूर्ति को भी उतना ही आदर देती थी ।

सुदेव और कुदेव

सुसाधु और आडंबरधारी साधु

सत्यधर्म और मिथ्याधर्म की सूक्ष्म भेदरेखा से लगभग अपरिचित थी ।

श्रद्धा व चारित्र संपन्न बंधु मुनियों के लिए यह सबसे बडी चुनौती थी कि इस भोली प्रजा को वीतराग के सत्यमार्ग से कैसे परिचित कराया जाय, इसके लिए उन्होंने दृढ संकल्प किया ।

प्रारंभ में पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म. ने जैन धर्म के प्राथमिक आचारों का उपदेश देना प्रारंभ किया ।

घर घर में बासी रोटी, बासी भक्षण भी चलता था, उसे भी दूर करने का प्रयास किया । पूज्य मुनिश्री युवा थे, परंतु उनकी वाणी में कठोरता, कर्कशता या कटाक्ष की शैली नहीं थी ।

वे भूल करनेवालों को भी खूब मिठास से समझाते थे, जिसके परिणाम स्वरुप लोग सन्मार्ग में जुडते गए ।

समग्र चातुर्मास में गांव में आराधना-साधना का अच्छा माहोल रहा ।

अधिकांश लोग गुरुवंदन-चैत्यवंदन की विधि से भी अपरिचित थे ।

दोनों मुनियों ने लोगों को देव-गुरु-धर्म के साथ जोडने का काम किया ।

दृष्टांत व लौकिक कहावतों आदि के माध्यम से वे वीतराग के सत्य सिद्धांतों को भी इतनी सरल व सुबोध भाषा में समझाते थे कि लोग उनके पीछे लट्टू हो जाते थे ।

पर्वाधिराज महापर्व के दिनों में संघ में अपूर्व आरधना-तपश्चर्याएं संपन्न हुई ।

जिन मंदिरों में प्रभु के दर्शन-पूजन की भीड लगने लगी ।

देखते ही देखते चातुर्मास पूर्ण हो गया और उभय महात्माओं के विदाई का दिन भी आ गया ।

लोगों के दिल में वियोग की वेदना थी आखिर अश्रुभीगे नेत्रों से एक दिन नगरजनों ने उन्हें विदाई दी ।

दोनों मुनियों ने विदाई की शुभवेला में विहार प्रारंभ किया ।

दोनों मुनि गांव छोडकर जा रहे थे, परंतु वे लोक हृदय में प्रतिष्ठित हो चूके थे । नगरवासियों की यही प्रबल इच्छा कि पुन: उभय मुनियों का अपने नगर में दूसरा चातुर्मास हो ।

वि.सं. 2003 में पूज्यश्री का चातुर्मास खिवांदी में हुआ ।

पूज्य मुनिराज श्री के प्रवचनों से खिवांदी का संघ भी खूब प्रभावित हुआ ।

खिवांदी संघ में भी पूज्य मुनिश्री के कुल तीन चातुर्मास हुए । खिवांदी संघ भी पूज्यश्री से खूब जुडा ।

जन्मभूमि में पुनः चातुर्मास

वि.सं. 2007 में पूज्यश्री का अपनी जन्मभूमि में पहला चातुर्मास हुआ उस चातुर्मास की महक सभी के दिलों दिमाग में थी, परिणाम स्वरुप वि.सं. 2011 में पुनः संघ की विनती स्वीकार कर दोनों बंधु मुनिवर अपनी जन्मभूमि पोसालिया में चातुर्मास हेतु पधारे ।

पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचनों से संघ में सुंदर जागृति आई ।

ग्लान गुरु की सेवा

पूज्य मुनिश्री विमलप्रभविजयजी म. के गुरुदेव पू. उपाध्याय प्रवर श्री धर्मविजयजी म. का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था ।

उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए बंधू बेलडी मुनिवरों ने लगभग 5 चातुर्मास लुणावा में किए और अपने उपकारी गुरुदेव व गुरुबंधु की खूब सुंदर वैयावच्च भक्ति की । अंतिम समय में उन्हें खूब समाधि प्रदान की ।

वि.सं. 2021 में पू. उपाध्याय श्री धर्मविजयजी म. का लुणावा में अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म हुआ ।

इस वैयावच्च के प्रभाव से उन्होंने अपूर्व पुण्योपार्जन किया । जिसके फलस्वरुप उनका पुण्य प्रभाव खूब बढ गया । उनके पुण्य प्रभाव से खूब सुंदर शासन प्रभावनाएँ होने लगी ।

सिद्धपूर में धर्म प्रभावना

यद्यपि पूज्य मुनिराजश्री की जन्मभूमि राजस्थान थी, परंतु गुजराती भाषा पर भी उनका उतना ही प्रभुत्व था, जिसके स्वरुप उन्होंने गुजरात के भी जिन जिन गांवों में चातुर्मास किएं, वहां पर खूब सुंदर प्रभावना हुई है ।

सिद्धपूर (पाटण) में पूज्य मुनिराजश्री के कुल पांच चातुर्मास हुए थे । वे खूब सरल गुजराती भाषा में प्रवचन देते थे । परिणाम स्वरुप आबाल-गोपाल सभी उनके प्रवचनों का आस्वाद लेते थे ।

पू. विमलप्रभविजयजी की अपूर्व समाधि–साधना

पिछले कुछ वर्षों से लघु बंधु पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी म. की काया रोगों से घिर गई थी । उन्हें वायु का तीव्र प्रकोप था । इस भयंकर रोग के कारण उनका विहार रुक गया था-उन्हें डोली में विहार करना पडता था ।

पू. पुण्योदयविजयजी म. ने वर्षों तक अपने छोटे भाई मुनि की खूब सेवा भक्ति और वैयावच्च की थी ।

विमलप्रभविजयजी म. खूब शांत प्रकृति के थे । वे इस दु:ख दर्द को खूब समाधिपूर्वक सहन कर रहे थे ।

वे ज्योतिषशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे । समुदाय में उनके मुहुर्त को प्रधानता दी जाती थी । सत्ताइस पट्टी में से दीक्षित दोनों बंधु मुनिवर का सत्ताइस पट्टी में खूब प्रभाव था ।

उसी सत्ताइस पट्टी में उथमण गांव से पू.मु.श्री जिनसेनविजयजी म. की दीक्षा हुई थी, जो खूब सेवाभावी थे ।

अध्यात्मयोगी पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म. की उन्होंने 14 वर्षों तक खूब सेवाभक्ति की थी ।

पूज्य पंन्यासजी भगवंत के कालधर्म के बाद वि.सं. 2039 में पू.मु. श्री जिनसेनविजयजी म., पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी म. की सेवा शुश्रुषा हेतु पू.मु.श्री पुण्योदयविजयजी म. की निश्रा में आ गए थे ।

तपस्वी मुनिराजश्री वर्धमान तप के उत्कृष्ट आराधक थे, उन्होंने वि.सं. 2038 में वर्धमान तप की 100 ओली पूर्ण की थी और दूसरी बार पुन: पाया डालकर वर्धमान तप प्रारंभ किया था ।

एक ओर आयंबिल का तप और दूसरी ओग ग्लान मुनि की सेवा । वे दिल से सेवा करते थे ।

वातरोग के कारण पू.मु.श्री विमलप्रभविजयजी म. संवत्सरी के दिन भी एकासना आदि का तप भी नहीं कर पाते थे ।

वि.सं. 2043 में पूज्य बंधु बेलडी मुनिराज एवं तपस्वी मु.श्री जिनसेनविजयजी आदि तीन ठाणा का अपनी जन्मभूमि पोसालिया में चातुर्मास था ।

ज्योतिष विद्या विशारद पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी म. को अपनी जन्मकुंडली आदि के आधार पर ख्याल आ गया कि अब मेरा अंतिम समय नजदीक आ गया है ।

पू. विमलप्रभविजयजी म. ने अपने 46 वर्ष के निर्मल संयम धर्म के पालन के फलस्वरुप **'समाधिभाव'** को अपने जीवन में खूब आत्मसात् किया ।

अपने अंतिम समय को सफल व सार्थक बनाने के लिए वे खूब उत्सुक थे ।

संवत्सरी जैसे महान दिन में भी जो एकासना करने में अशक्त थे, उन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय को समाधिमय बनाने के लिए चातुर्मास प्रारंभ के शुभ दिन से अनशन व्रत स्वीकार लिया ।

वे अपने ज्येष्ठ बंधु पू. पुण्योदयविजयजी म. के पास प्रतिदिन उपवास तप का पच्चक्खाण लेने लगे । उन्होंने अपने मन को **'ॐ ह्रीँ अर्हं नमः'** के ध्यान में जोड दिया ।

उनकी समाधि हेतु, पू.मु. श्री जिनसेनविजयजी म. उनकी रात और दिन सेवा-शुश्रुषा करने लगे और उनकी आत्म-समाधि में सहायक बनने लगे ।

चातुर्मास प्रारंभ के 16 उपवास के साथ मु. श्री विमलप्रभविजयजी म. ने अत्यंत समाधि के साथ उन्होंने अपना देह छोड दिया ।

चार आहार का संपूर्ण त्याग कर अपने जीवन के अंतिम समय तक अपूर्व समाधि भाव धारण करनेवाले महात्मा पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी म. को कोटि कोटि वंदन हो ।

महाराष्ट्र में पदार्पण

अपने संयम जीवन के 53 वर्षों में राजस्थान व गुजरात की धन्य धरा पर विचरण कर पू. पुण्योदयविजयजी म. ने जैन धर्म की खूब शासन प्रभावना की थी ।

लघुबंधु पू.विमलप्रभविजयजी म. के समाधिपूर्वक कालधर्म के बाद पू.मु. श्री जिनसेनविजयजी म., पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म. के साथ हो गए थे । उस समय पू. पुण्योदयविजयजी म. के पास पू.आ. श्री गुणरत्नसूरिजी म. के शिष्यरत्न शांत स्वभावी पू.मु. श्री जयंतरत्नविजयजी म. एवं पू.आ.श्री कुलचंद्रसूरिजी म. के प्रथम शिष्य मु. श्री प्रशांतविजयजी म. थे ।

76 वर्षीय पू.वयोवृद्ध मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. ने देखा कि राजस्थान की अधिकांश जैन प्रजा का मुख्य प्रवाह महाराष्ट्र व दक्षिण भारत की ओर है ।

सत्ताइस पट्टी के अधिकांश लोग मुंबई, कल्याण, कर्जत, काममेट व पूना-चैन्नई में बसे है ।

अपने गुरु-भक्तों की हार्दिक विनती का स्वीकार कर एक शुभ दिन पू. पुण्योदयविजयजी म. ने अपने उपकारी गुरुदेव श्री को अंतिम वंदन कर वि.सं. 2047 में बीसनगर (गुजरात) में चातुर्मास कर राजस्थान-गुजरात को अलविदा कर महाराष्ट्र की ओर अपनी विहार यात्रा प्रारंभ की ।

मुंबई प्रवेश प्रसंग पर गुरु भक्तों ने उनका हार्दिक स्वागत किया ।

मुंबई की धन्यधरा पर वि.सं. 2048 में सर्वप्रथम चातुर्मास का सौभाग्य पारसनगर-जोगेश्वरी को प्राप्त हुआ ।

मुंबई में पहली बार ही पूज्यश्री का आगमन हुआ था, अतः संघ में अपूर्व उल्लास था । खूब शासन प्रभावना पूर्वक वह चातुर्मास संपन्न हुआ ।

कल्याण में धर्म प्रभावना

वि.सं. 2049 में पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म. का चातुर्मास कल्याण की धन्यधरा पर हुआ । 27 पट्टी की काफी बस्ती होने से यह चातुर्मास खूब उत्साह-उल्लास व शासन प्रभावक रहा ।

चातुर्मास के अंत में महामंगलकारी उपधान तप की भी आराधना हुई । अनेक पुण्यवंत आत्माओं ने मोक्ष माला का परिधान भी किया ।

मंदिर निर्माण की प्रेरणा

कल्याण चातुर्मास के बाद पूज्यश्री का माघ मास में कर्जत की धन्यधरा पर आगमन हुआ । सकल संघ ने उनका भावभीना स्वागत किया । कर्जत में अधिकांश बस्ती 27 पट्टी की है । पूज्यश्री के आगमन से सभी के दिल में अपूर्व उल्लास था ।

कर्जत में एक छोटासा जिनालय था, जिनमें प्रभुजी महेमान के रुप में बिराजमान थे ।

पूज्य श्रीने संघ में शिखरबद्ध जिनालय के लिए प्रेरणा की ।

विहार दरम्यान पधारे प.पू.आ. श्री दक्षसूरीश्वरजी म., प.पू.आ. श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी म., प.पूआ. श्री लब्धिसूरीश्वरजी म., पू.मु. श्री भव्यदर्शनविजयजी म. ने भी प्रबल प्रेरणा दी ।

आज तक संघ में अनेक अनेक आचार्य भगवंतों का आगमन हो चूका था, कइयों ने मंदिर निर्माण हेतु प्रेरणाएं भी दी थी, परंतु किसी भी प्रकार से कार्य को वेग नहीं मिल रहा था ।

पू.मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. का प्रबल पुण्योदय था । जिसके फल स्वरुप कठिन कार्य भी सरल हो जाता था ।

संघ में मंदिर निर्माण के संबंध में अलग-अलग राये थे ।

आखिर एक दिन रात्रि में शुभ मुहुर्त में पूज्यश्री की निश्रा में संघ की मिटिंग हुई ।

मिटिंग में पूरा संघ हाजिर था । पूज्यश्री ने मंदिर निर्माण हेतु अपनी ओर से मार्गदर्शन दिया ।

संघ के प्रतिष्ठित श्रावक संघवी पेराजमलजी प्रेमचंदजी परमार ने घोषणा की, मंदिर निर्माण का निर्णय नहीं होगा, तब तक मैं अनशन करता हूँ ।

उनकी इस घोषणा से संघ में सन्नाटा छा गया । पेराजमलजी के दो उपवास हो गए ।

पूज्यश्री की व्यवहार कुशलता, नि:स्पृहता एवं सरलता आदि के कारण कार्य को वेग मिला । रात को 1 बजे पूज्यश्री ने संघ के हिसाब के चोपडें व चाबियाँ अपने हाथों में ले ली ।

मंदिर के योग्य भूमि का प्रश्न था । मंदिर निर्माण हेतु संघ के पास बडा फंड भी नहीं था ।

परंतु पूज्य मुनिराजश्री की सुझबुझ से सारी समस्याओं का समाधान हो गया और मंदिर निर्माण हेतु Without Interest संघ को उधार रकम देने का निर्णय हुआ, जिसमें संघ के कई सदस्य जुडें ।

मंदिर निर्माण हेतु पास ही भूमि का निर्णय लिया गया ।

पूज्यश्री की शुभ निश्रा में वैशाख मास में मंदिर का भूमिपूजन हुआ ।

श्रावण मास में शिलान्यास विधि संपन्न हुई ।

वि.सं. 2050 में पूज्यश्री ने माहिम-मुंबई में चातुर्मास किया और संघ में सुंदर प्रभावना हुई ।

ग्रामीण प्रजा में सरलता

संवत् 2051 ।

वयोवृद्ध, दीर्घसंयमी पू.मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. के कर्जत चातुर्मास के प्रवेश-प्रसंग पर मैं भी साथ में था । चातुर्मास प्रवेश बाद कर्जत में 15-20 दिन की हमारी स्थिरता भी रही ! उस समय **पू. तपस्वी मुनिश्री जिनसेनविजयजी म.** के वर्धमान तप की 175 वीं ओली चल रही थी । संघ में लगभग 125 घर थे ।

एक शुभ दिन प्रवचन में मैंने प्रेरणा दी कि पू.तपस्वी मुनि श्री के दीर्घतप की अनुमोदनार्थ जेठ वदी-6, दि. 18-6-1995 रविवार को संघ में 175 आयंबिल तप की आराधना हो तो बहुत अच्छा होगा ।

संघ में आयंबिल खाता भी नहीं था-वर्षा के भी दिन थे-परंतु लोगों में अपूर्व उत्साह था ।

कुछ दिनों तक प्रवचन में नियमित रूप से आयंबिल तप की महत्ता समझाई । परिणाम स्वरुप 7 वर्ष के बालक से लेकर 80 वर्ष के वयोवृद्ध भाई बहन उस तप में जुड़ गए और संघ में आश्चर्यकारी 181 आयंबिल हो गए ।

65 वर्षीय एक भाई तथा 36 वर्षीय एक युवक ने तो जिंदगी में पहली बार आयंबिल किया था ।

उस दिन प्रकृति ने भी पूरा-पूरा सहयोग दिया था । मुझे भी अनुमोदना का लाभ मिला ।

मैंने अनुभव किया, **शहरी प्रजा से भी ग्रामीण प्रजा को आराधना में जोड़ना थोड़ा आसान है ।**

शहरी प्रजा में बुद्धिवाद का जोर ज्यादा दिखाई देता हैं, जबकि ग्रामीण प्रजा में 'श्रद्धा' का जोर ज्यादा दिखाई देता है ।

कर्जत में चातुर्मास

वि. संवत् 2051 में पूज्यश्री का कर्जत में पहला ही चातुर्मास था ।

इस चातुर्मास में नूतन जिनालय के नवनिर्माण हेतु बहुत ही सुंदर प्रेरणा हुई । मंदिर के कार्य को वेग मिला ।

कामसेट में चातुर्मास

वि.सं.2052 में पूज्य मुनिराजश्री का कामसेट में चातुर्मास निश्चित हुआ ।

कामसेट में भी जैनों के 125 घर हैं, परंतु जिनमंदिर-गृहमंदिर जैसा था ।

पूज्यश्री ने शिखरबद्ध मंदिर के लिए प्रेरणा दी ।

एक दिन मंदिर निर्माण हेतु सकल संघ इकट्ठा हुआ । गांववालों ने निर्णय लिया कि मंदिर निर्माण हेतु बाहर गांव से देवद्रव्य की रकम ली जाएगी ।

संघ ने अपनी भावना पू.मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. के समक्ष रखी और आशीर्वाद मांगा ।

गुरुदेव का पुण्य प्रकोप जाग उठा उन्होंने एक ही झटके में बाहर से देवद्रव्य के सहयोग लेने का इन्कार कर दिया और कहा, 'अपना घर अपने पैसे से बनाते हो और प्रभु के घर (मंदिर) के लिए बाहर (भीख) मांगना यह संघ के लिए कत्तई उचित नहीं है ।'

पूज्यश्री के आगे बोलने की किसी में हिम्मत नहीं थी । परस्पर बातें होने लगी, 'इतनी बडी रकम संघ में कहाँ से इकट्ठी होगी ?'

पूज्यश्री ने कहा, 'तुम अपना काम चालू करो, तुम्हें पैसों की कमी नहीं रहेगी ।'

पूज्यश्री के मार्गदर्शनानुसार मंदिर निर्माण की सारी योजना बनाई गई और मंदिर का काम तीव्र गति से आगे बढने लगा ।

प्रतिमास संघ में रकम आने लगी और देखते ही देखते विशालकाय जिनमंदिर भी खडा हो गया ।

रेवदंडा में चातुर्मास

रेवदंडा संघ में प्रथम बार वि.सं. 2053 में चातुर्मास हेतु पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म. एवं पू. जयंतरत्नविजयजी म. रेवदंडा पधारे । प्रतिदिन पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन होते थे । उनकी जबान पर मानों माँ शारदा का वास था, वे जो भी बोलते थे, भक्तजन उनकी आज्ञा-उपदेश को शिरोधार्य करते थे ।

रेवदंडा संघ में अपार उत्साह था । पूज्यश्री के पुण्यप्रभाव से संघ में अपूर्व आराधना-तपश्चर्याएं आदि हुई । कोंकण प्रदेश में गुरु भगवंतों के चातुर्मास नहींवत् होते है । पूज्यश्री के रेवदंडा चातुर्मास से खूब जागृति आई ।

वि.सं. 2055 में पुनः पूज्य श्री का रेवदंडा में चातुर्मास हुआ । उनके सदुपदेश से पर्युषण में सिद्धितप आदि की तपश्चर्याएं हुई । वि.सं. 2056 में पू.पं. श्री रत्नसेनविजयजी म. आदि का भी रेवदंडा आगमन हुआ था और उनकी प्रेरणा से धार्मिक पाठशाला चालु हुई थी, जो आज भी चालू है ।

उनकी प्रेरणा से नूतन उपाश्रय एवं उमराव मंगल भवन का भी निर्माण हुआ । नूतन मंदिर निर्माण हेतु भी उनकी प्रेरणा व मार्गदर्शन रहा ।

कर्जत की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा

पूज्यश्री पुण्योदयविजयजी म. की शुभ निश्रा में वि.सं. 2050, वैशाख सुदी-10 दि. 20-5-1994 के दिन मंदिर की खननविधि एवं आसो वदी-6, वि.सं. 2050, दि. 26-10-1994 के दिन शिलान्यास विधि संपन्न हुई थी ।

कर्जत की धन्यधरा पर विशालकाय गगनचुंबी नमिनाथ प्रभु का भव्य जिनालय पूर्णाहूति की ओर अग्रेसर था ।

पूज्य पुण्योदयविजयजी म. की शुभ निश्रा में प्रतिष्ठा कराने के लिए संघ एकमत था ।

प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने के लिए कर्जत श्री संघ के आग्रह से वि.सं. 2054 में पूज्यश्री ने कर्जत में चातुर्मास किया ।

विशालकाय जिनमंदिर में कुछ नवीन जिन बिंब भराने का निश्चय किया । अंजनशलाका प्रतिष्ठा हेतु पूज्यश्री के निर्देश से प्रवचन प्रभावक पू. आचार्यश्री कीर्तियशसूरीश्वरजी म.सा. को पधारने के लिए विनती की गई, परंतु कुछ कारणवश उनका आगमन नहीं हो सका । उसके बाद न्याय विशारद पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी म. के शिष्यरत्न शासन प्रभावक पू.पं. श्री विश्वकल्याणविजयजी म. आदि को विनती की गई और उनका आगमन निश्चित हुआ ।

शुभ मुहुर्त की मंगल वेला में पूज्य पुण्योदयविजयजी म. की शुभ निश्रा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संबंधी चढावे बोले गए ।

श्री संघ में कल्पनातीत करोडों के चढावे हुए । संघ के प्रत्येक सदस्य के दिल में अमाप उत्साह था ।

उभय पूज्यों की निश्रा में नौ दिन के भव्य महोत्सव के साथ वि.सं. 2055 वैशाख सुदी-7 दि. 24-4-1999 के दिन नमिनाथ आदि की भव्य अंजन शलाका प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी । कर्जत संघ पूज्यश्री का सदा ऋणी रहेगा ।

बदलापूर संघ में संप

मुंबई-पूना रेल्वे Line में मुंबई से 70 कि.मी. दूरी पर बदलापूर स्टे. है । यहां वि.सं. 2013 पोष वदी 1 के दिन पार्श्वनाथ प्रभु का गृह जिनालय बना था, तब से संघ में बस्ती व समृद्धि बढी । ई.सन्. 1986 में शिखर बद्ध मंदिर हेतु जमीन खरीदी एवं दि. 11-4-1986 को पू.आ.श्री दक्षसूरिजी म. की निश्रा में मंदिर का खात मुहुर्त हुआ । 14 वर्ष तक मंदिर का काम चला, परंतु संघ में परस्पर संक्लेश के कारण वर्षों से बदलापूर के जैन मंदिर कार्य संपन्न नही हो पा रहा था । मंदिर का कार्य भी अधुरा पडा था ।

संघ का पुण्योदय जागृत हुआ और वि.सं. 2057 में एक शुभ दिन वयोवृद्ध पू. पुण्योदयविजयजी म. ने चातुर्मास हेतु बदलापुर में प्रवेश किया ।

'पुण्यशाली के पगले निधान' की युक्ति के अनुसार पू. पुण्योदयविजयजी म. के शुभ आगमन के साथ ही संघ की रौनक बदलने लगी ।

संघ में हुए प्रथम बार गुरु भगवंत के चातुर्मास से संघ की रोनक बदल गई । पर्युषण में संघ में अभूतपूर्व तपश्चार्याएं हुई ।

पूज्यश्री के प्रवचनों के प्रभाव से संघ में परस्पर की कटुता दूर होने लगी और वर्षों से बंद पडे मंदिर निर्माण कार्य को भी खूब वेग मिला ।

परिणाम स्वरुप सकल संघ ने एक होकर पूज्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य की और एक दिन पूज्यश्री की निश्रा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा की जाजम निश्चित हुई ।

संघ के उत्साह में इतना वेग आ गया कि कल्पना बाहर के चढावे हुए और वि.सं. 2058 में मगसिर मास में शासन प्रभावक प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नाकरसूरीश्वजी म. एवं आपकी शुभनिश्रा में मूलनायक श्री पार्श्वनाथ आदि जिनबिंबों की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ । संघ में प्रतिष्ठा प्रसंग पर करोडों के चढावे हुए ।

जीवन का संध्याकाल एवं अंतिम समाधि–साधना

जिसका जन्म हैं, उसका मरण सुनिश्चित है । जन्म भी उसी का सफल व सार्थक गिना जाता है जो अंतिम समय में अपने देह भाव से मुक्त होकर आत्म भाव में लीन बनकर नश्वर ऐसे देह का सहजता से त्याग करता है ।

विशुद्ध संयमप्रेमी पूज्य मुनिराजश्री पुण्योदविजयजी म. के संयम जीवन के 62 वर्ष पूर्ण हो चूके थे और उम्र के 85 वर्ष पूर्ण हो चूके थे ।

यद्यपि दिमाग उतना ही तेज था परंतु शरीर के पूर्जे ढीले हो चूके थे । शरीर अपना साथ देना छोड रहा था । शरीर में अशक्ति दिन-प्रतिदिन बढती जा रही थी ।

पूज्य मुनिराजश्री गीतार्थ थे, ज्ञानी थे, अनुभवी थे, अत: अब अपने संयम जीवन के अंतिम फल समाधिमरण को प्राप्त करने के लिए समुत्सुक थे, अत: अब अपने संयम जीवन में विहारचर्या को गौण बनाना जरुरी था ।

प्रभु की आज्ञा है- ***'जब तक शरीर साथ देता हो, साधु के लिए विहार चर्या अनिवार्य है, परंतु शरीर साथ नहीं देता हो तो अब स्थिरवास कर शासन प्रभावना आदि कार्यों को गौणकर अंतिम आराधना की तैयारी करना ही एक कर्तव्य बन जाता है ।'***

कर्जत, खोपोली, कामसेट आदि अनेक संघों के गुरु भक्तों की अपने अपने गांव में पूज्यश्री को स्थिरवास कराने की विनती थी ।

कामसेट में पूज्यश्री की सांसारिक बहन झमुबाई रहती थी उनके सुपुत्र शांतिलालजी, पोपटलालजी और अमृतलालजी के दिल में पूज्यश्री के प्रति खूब लगाव और भक्ति थी ।

पोपटलालभाई तो स्वयं आराधक और वैयावच्च प्रेमी भी थे । सुकनजी बाफना, अनिलजी सिरोहिया भी उनके अनन्य गुरु भक्त थे ।

कुछ वर्षों पूर्व वि.सं. 2052 में हुए पूज्य श्री के चातुर्मास से गांववालों के दिल में भी खूब आदर सन्मान था ।

संघ के अध्यक्ष दलीचंदजी गादिया आदि ने भी पूज्यश्री को स्थिरवास हेतु आग्रह किया ।

संघ सेवक इंदरमलजी पुखराजजी गादिया ने स्थिरवास के लिए 2500 स्क्वैर फुट का प्लाट भेंट दिया और अनिल जवानमलजी सिरोहिया ने हॉल बनवाकर देने की घोषणा की ।

'पुण्योत्री' संस्था का गठन

पूज्यश्री पुण्योदयविजयजी म. दीर्घ दृष्टा थे, उन्हें पता था कि राजस्थानी प्रजा धीरे धीरे राजस्थान छोडकर महाराष्ट्र में बस रही है ।

भविष्य में वयोवृद्ध महात्माओं के स्थिरवास हेतु योग्य स्थान की अपेक्षा रहेगी ।

उनके सदुपदेश से पुण्योत्री संस्था का गठन हुआ और अल्पसमय में ही **'पुण्योदय धाम'** तैयार हो गया ।

साधु वैयावच्च एवं साधर्मिक भक्ति हेतु 11,000 के 270 नाम आ गए थे ।

कामसेट में स्थिरवास
पहला चातुर्मास

जेठ सुदी-10, वि.सं. 2058, दि. 20 जुन ई.सन् 2022 के शुभ दिन पूज्य मुनिराज श्री का कामसेट में चातुर्मास प्रवेश था ।

दि. 19 जुन को पू. गणिवर्य श्री रत्नसेनविजयजी म. भी मुंबई से विहारकर पधार गए थे ।

दि. 20 जुन को सैकडों गुरु भक्तों के साथ पूज्यश्री का **पुण्योदय धाम** में चातुर्मास हेतु भव्य नगर प्रवेश हुआ !

सेवाभावी मु.श्री जयंतरत्नविजयजी म. खडेपांव पूज्यश्री की सेवा में तत्पर थे ।

दि. 21 जुन को कामसेट जैन संघ के उपाश्रय में पू. गणिवर्य श्री के नूतन दीक्षित मु. श्री केवलरत्नविजयजी म. की बडी दीक्षा विधि पूज्यश्री एवं पूज्य गणिवर्यश्री की निश्रा में खूब उत्साह से संपन्न हुई । इस प्रसंग पर 40 से अधिक महानुभावों ने बारहव्रत भी स्वीकार किए और 81 महानुभावों ने सामूहिक एकासने भी किए ।

'पुण्योदय धाम' जंगम तीर्थ बन चूका था । पूज्यश्री के दर्शन-वंदन के लिए दूर दूर से भक्तों का तांता लगा रहता था । देखते ही देखते समय का प्रवाह आगे बढने लगा और स्थिरवास के दो चातुर्मास भी पूर्ण हो गए ।

वि.सं. 2060 के चातुर्मास प्रारंभ बाद दिन-प्रतिदिन पूज्यश्री स्वास्थ्य गिरने लगा । शरीर कमजोर होने लगा । पर्युषण बाद उन्हें खूब दश्तें लगने लगी । शरीर खूब कमजोर हो गया ।

हॉस्पीटल में Admit होने की उनकी कत्तई इच्छा नहीं थी, फिर भी अनिच्छा से उन्हें पूना हॉस्पीटल में Admit किया गया ।

हॉस्पीटल में वे लगभग 1½ मास रहे । उन्हीं की प्रेरणा से प्रारंभ हुए मंदिर का कार्य पूर्णाहूति की ओर था ।

संघ में नूतन जिनालय की प्रतिष्ठा के लिए अमाप उत्साह था ।

एक दिन संघ की जाजम हुई । पूज्यश्री हॉस्पीटल में थे । कुछ भक्तजन उनके आशीर्वाद लेने गए ।

पूज्यश्री होश में थे, परंतु बोलना शक्य नहीं था । उन्होंने अपनी चार अंगुली ऊँची की । भक्तों को ईशारे में संकेत मिल गया । उस दिन प्रतिष्ठा संबंधी चार करोड के चढावे हुए, जो कल्पना बाहर थे ।

हॉस्पीटल की स्थिरता दरम्यान उनके सांसारिक भत्रीज चंपालालजी ने उनकी खूब सेवा शुश्रुषा की ।

डॉक्टरों के योग्य उपचार चालू होने पर भी उनके स्वास्थ्य में कुछ भी सुधार न दिखने पर उनकी अंतरंग भावना के अनुसार उन्हें पुन: कामसेट लाया गया और आसो वदी-पंचमी वि.सं. 2060 के दिन अत्यंत ही समाधि के साथ उन्होंने अपने नश्वर देह को छोडकर अनंत की यात्रा के लिए प्रयाण कर लिया ।

अंतिम यात्रा

पुण्यनिधान पूज्यश्री के काल धर्म के समाचार मिलने ही शासन प्रभावक पू.आ. श्री विश्वकल्याणसूरीश्वरजी म. भी पार्श्वप्रज्ञालय से कामसेट पधार गए ।

उनके कालधर्म के साथ ही वायुवेग से सारे समाचार चारों ओर फैल गए ।

भक्तों के आघात का पार न रहा । उनके भौतिक देह को नवीन वस्त्र परिधान पूर्वक संघ के दर्शनार्थ **'पुण्योदय धाम'** में रखा गया ।

हजारों भक्तजन उनके अंतिम दर्शनार्थ कामसेट पधारे थे । कामसेट संघ एवं पुण्योत्री संस्था के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने बहुत ही सुंदर व्यवस्था संभाली थी ।

उनके भक्त आनंदराजजी गेमावत भी अनिल गेमावत आदि के साथ वहां उपस्थित हो गए थे ।

दूसरे दिन ठीक 10 बजे उनकी अंतिम यात्रा के चढावे प्रारंभ हुए ।

गुरु भक्तों ने खूब उत्साह से भाग लिया । अग्नि संस्कार का चढावा में पोसलिया निवासी प्रेमचंदजी कस्तुरचंदजी परमार परिवार ने लिया ।

अंतिम गुरुपूजन के बाद उनके पवित्र देह को जरीयन की पालखी में विराजमान किया गया ।

एक महान शासन प्रभावक आचार्य की भांति उनकी अंतिम पालखी निकली ।

कामसेट के मुख्य राजमार्गों से प्रसारित होकर उनकी पालखी पूर्व निर्धारित स्थल **'विमल पुण्यगिरि'** पर पहुँची । लगभग 8 से 10 हजार लोगों की उपस्थिति थी !

चारों ओर 'जय जय नंदा, जय जय भद्दा' के उद्घोष सुनाई दे रहे थे ।

चंदन की चित्ता पर उनके नश्वर देह को स्थापित किया गया ।

अश्रुपूर्व नेत्रों से परमार परिवार ने पूज्यश्री के पवित्र देह को मुखाग्नि प्रदान की और देखते ही देखते पूज्यश्री का भौतिक देह पंचभूत में विलीन हो गया ।

पूज्य पुण्योदयविजयजी म.सा. का गुण–वैभव

गृहस्थ जीवन में व्यक्ति के मूल्यांकन का केन्द्रबिंदु 'धन' होता हैं, जब कि श्रमण जीवन में व्यक्ति के मूल्यांकन का केन्द्र बिंदु 'गुण' होता है ।

गुणहीन साधु तृण की भांति मूल्यहीन कहलाता है, जबकि गुण संपन्न साधु की कींमत चक्रवर्ती से भी बढकर है ।

कालधर्म के वर्षों बीतने के बाद भी आज भी पूज्य श्री पुण्योदयविजयजी म. अनेक के हृदय में प्रतिष्ठित है । उनका गुण वैभव में अनुमोदनीय है ।

निःस्पृहता मूर्ति

यद्यपि पूज्यश्री का 65 वर्ष का सुदीर्घ संयम पर्याय था, परंतु उन्होंने पद प्राप्ति की लालसा से अयोग्य को शिष्य बनाकर पद-प्राप्ति की किसी भी प्रकार की अभिलाषा नहीं रखी थी ।

यद्यपि वे पद से आचार्य नहीं थे, परंतु उनका पुण्य प्रभाव तो 'आचार्य जैसा ही था ।'

मरुधर की भूमि पर दीर्घकाल तक विचरण कर उन्होंने खूब शासन प्रभावना की परंतु किसी भी प्रकार के मान-सन्मान की लालसा नहीं रखी थी ।

निष्कलंक चारित्र के स्वामी

उन्होंने यौवन वय में भागवती-दीक्षा अंगीकार की थी, परंतु कहीं भी यौवन का उन्माद उन्हें छू न सका था ।

65 वर्ष के संयम पर्याय में कहीं भी अपने चारित्र पर दाग लगने नहीं दिया ।

वे निष्कलंक चारित्र के स्वामी थे । उनके निर्मल चारित्र के प्रभाव से ही उनका निर्मल पुण्य था ।

उनकी पावन निश्रा में दान की गंगा बहती थी, परंतु कभी भी उन्होंने भक्तों की दाढी में हाथ नहीं डाला । उनकी नि:स्पृहता के प्रभाव से लोग स्वयंभू प्रेरित होकर लाखों का दान करते थे ।

निर्दंभ जीवन

उनके निर्मल जीवन में माया-कपट को कोई स्थान नहीं था ।

वे हृदय से खूब सरल थे ।

एक छोटे से बालक से लेकर बूढे तक, एक अमीर से लेकर गरीब तक कोई भी व्यक्ति उनके पास कभी भी उपस्थित होकर अपने दिल की व्यथा को व्यक्त कर सकता था और वे भी सरल हृदय से योग्य मार्गदर्शन प्रदान करते थे ।

दयालु हृदय

बाह्य दृष्टि से उनका स्वभाव थोडा कडक लगता था, परंतु उनका हृदय अत्यंत ही कोमल था ।

कोई भी दु:खियारा उनके पास आता तो वे उसे शांति से आश्वासन देते और धर्म आराधना की सुंदर प्रेरणा देते थे ।

आर्थिक दृष्टि से कमजोर श्रावकों को अपने गुरु भक्तों को योग्य उपदेश देकर योग्य मदद भी कराते थे ।

उपधान तप

उनकी शुभनिश्रा में

वि.सं.	सुमेरपुर
	शिवगंज
	पोसालिया
	सिद्धपूर
	खिवांदी

नोवी
सिद्धपूर और
वि.सं. 2049 में कल्याण में महामंगलकारी
उपधान तप की आराधनाएँ भी संपन्न हुई थी ।

वैयावच्च प्रेमी

पूज्यश्री ने अपने जीवन में वैयावच्च गुण को भी खूब आत्मसात् किया था ।

अपने गुरुबंधु पू. उपाध्यायश्री धर्मविजयजी म. तथा अपने सांसारिक लघु बंधु पू.मु. श्री विमलप्रभविजयजी म. की खूब सेवा की थी ।

इस वैयावच्च गुण के प्रभाव से उन्होंने अपूर्व पुण्योपार्जन किया था, जिसके फलस्वरुप वे जहां भी जाते, सुंदर शासन प्रभावना के कार्य सहज होते थे ।

तपश्चर्या

पूज्यश्री ने अपने जीवन में तीन वर्षीतप और वर्धमान तप की 23 ओलियाँ भी की थी ।

सामूहिक अट्ठम के प्रेरणादाता

किरणकुमार वीरचंदजी-कल्याण

मेरे परमोपकारी गुरुदेव **पू.मु.श्री पुण्योदयविजयजी म.** का मारवाड में विचरण चल रहा था । उस समय उन्हीं की प्रेरणा से उथमण तीर्थ में पोषदशमी की सामूहिक आराधनाएं प्रारंभ हुई ।

वि.सं. 2045, ई.सन् 1989 में उन्हीं की तारक निश्रा में उथमण तीर्थ में पोषदशमी के सामूहिक अट्ठम कराने का लाभ हमारे परिवार को मिला । उस समय 40 अट्ठम हुए थे । पोष दशमी के मेले का लाभ भी हमें मिला था ।

उनका हमारे परिवार पर असीम उपकार है ।

हमारे परिवार के धर्मदाता

–चंपालाल छोगमलजी पालरेचा

वि.सं. 2041 में पू.मु.श्री पुण्योदयविजयजी म., पू. विमलप्रभविजयजी म. एवं पू. तपस्वी मु. श्री जिनसेनविजयजी म. का चातुर्मास हमारे गांव लकमावा में हुआ, हमारे गांव में सिर्फ 15 घर होने पर भी संघ में अपूर्व उत्साह था ।

गांव छोटा होते हुए भी हमारे संघ में आराधना आदि का अपूर्व उल्लास रहा । छोटे से गांव में इतने बडे महाराज का पहला ही चातुर्मास था ।

पूज्यश्री के समागम से हमारा पूरा परिवार धर्म मार्ग में जुडा ।

पूज्यश्री के चातुर्मास के बाद दूसरे ही वर्ष व्याख्यान वाचस्पति गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा, का विशाल परिवार के साथ लालबाग-माधव बाग में यादगार चातुर्मास हुआ ।

पू. पुण्योदयविजयजी म. की प्रेरणा-उपदेश से इस चातुर्मास में पूज्य गच्छाधिपतिश्रीजी के साथ संपर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । उनके उपदेश श्रवण से हमारे परिवार को सन्मार्ग की राह मिली ।

सद्भाग्य से पुज्यपादश्री के चातुर्मास परिवर्तन का लाभ हमारे परिवार को प्राप्त हुआ । तब से हमारा परिवार पूज्यश्री के समुदाय से विशेष जुडा ।

इस प्रकार हमारे परिवार में यत्किंचित् भी जो धर्म आराधना हो रही हैं, उसके मूल में पूज्य मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. ही थे । उनका हमारे परिवार पर असीम उपकार था, जिसे हम कभी भूल नहीं सकते है ।

चिर स्मरणीय संघ

पूज्य मुनिराज श्री विमलप्रभविजयजी म. ने अपनी दीक्षा के पूर्व जोयला निवासी संघवी शा. बदराजजी पुनमचंदजी धाणेशा-सोलंकी परिवार पूना में नौकरी की थी । वे ही बाबुभाई और ज्योतिष विशारद पू.मु.श्री विमलप्रभविजयजी म. के रुप में प्रसिद्ध हुए थे ।

वि.सं. 2027 में विद्वद्वर्य पूज्य मु. श्री पुण्योदयविजयजी म. एवं पू.मु.श्री विमलप्रभविजयजी म. ने जोयला (राज.) में चातुर्मास किया था ।

उस चतुर्मास ने धाणेशा सोलंकी परिवार ने बढ चढकर लाभ लिया था ।

पूज्यश्री के सदुपदेश से बदराजजी के दिल में राडबर तीर्थ के छ'री पालक संघ निकालने का मनोरथ पैदा हुआ ।

और एक शुभ दिन उभय पूज्य एवं साध्वीजी म. आदि की शुभ निश्रा में जोयला से राडबर तक का त्रिदिवसीय छ'री पालक संघ का आयोजन हुआ ।

इस संघ में 108 थैलागाडी, घोडे, रथ आदि का बडा ठाठ था ।

जो संघ पहले दिन पोसालिया रुका था, वहां से चुली होकर राडबर पहुंचा था, वहां खूब ठाठबाट से संघ माला का कार्यक्रम संपन्न हुआ था ।

समाधान-प्रेमी

अपने सुमधुर व्यवहार एवं व्यवहार कुशलता के द्वारा उन्होंने अनेक संघों के परस्पर कलह-क्लेश को भी दूर किया था ।

बदलापूर, कर्जत आदि अनेक संघों के परस्पर क्लेश आदि को दूर कर संघ में संप करवाया था ।

प्रभावक प्रवचन शक्ति के धारक

संयम जीवन के प्रारंभिक 10 वर्षों में गुरु कुलवास में रहकर ग्रहण व आसेवन शिक्षा प्राप्त की थी ।

उसके बाद उनका स्वतंत्र विचरण रहा । लगभग 52 वर्षों तक उनकी प्रवचनधारा सतत बहती रही थी ।

दृष्टांतों के माध्यम से एक लोक भोग्य शैली में वे इस प्रकार श्रोताओं को समझाते थे कि जिसके प्रभाव से आबाल गोपाल उनके उपदेश को ग्रहण कर लेते थे ।

उनकी प्रवचन शैली खूब सरल, सुबोध व स्पष्ट थी ।

मेरे जीवन के धर्मदाता

आनंदराज लालचंदजी गेमावत-बाली

वि.सं. 2008, ईस्वी सन् 1952 की बात है । मेरी 9th की परीक्षा पूर्ण हो चूकी थी । उस समय परम शासन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. अपने विशाल परिवार के साथ मेरी जन्मभूमि बाली पधारे थे ।

बाली संघ में अपूर्व उत्साह था । उनके स्वागत में पूरे नगर को सजा दिया गया था । स्थान-स्थान पर ध्वजा, पताकाएँ व तोरण लगे हुए थे । पूज्यश्री का भव्य सामैये के साथ प्रवेश व प्रवचन आदि हुए ।

उस समय उनके साथ पूज्य मुनिराज श्री पुण्योदयविजयजी म. भी उनके साथ में थे ।

उस समय उनके बेक पर नासूर था । उसका इलाज जरुरी थी । हमारे मोहल्ले में रहनेवाले वैद्यराजजी (सोजतवाले) ने उनका इलाज चालू किया । उस ईलाज हेतु उन्हें 1½ मास तक बाली रुकना पडा । ईलाज हेतु गाय के दही की जरुरत थी ।

हमारे घर पर गाय थी, अथ: गाय का दही वहोराने के लिए पूज्य मुनिराज हमारे घर पधारते थे । उस समय उनके निकट परिचय में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

नासूर की भयंकर पीडा में भी उनके नियमित प्रवचन होते थे । उनकी प्रवचन शैली इतनी सरल और आकर्षक थी कि जिसके प्रभाव से सारा उपाश्रय भर जाता था । पर्युषण पर्व जैसा माहोल खडा हो गया था । प्रवचन में बुजर्गों के साथ युवा वर्ग भी उपस्थित रहता था । 1½ मास में कई विद्यार्थी उनके भक्त बन गए ।

उनके साथ उनके लघु बंधु पू.मु.श्री विमलप्रभविजयजी म. थे, जो अत्यंत ही शांत प्रकृति के थे ।

बाली में 1½ मास की स्थिरता के फलस्वरुप वे मेरे हृदय में **'गुरु पद'** पर प्रतिष्ठित हो गए ।

उस वर्ष उनका चातुर्मास वि.सं. 2008 में खिवांदी में हुआ । उस चातुर्मास में मैं भी उनको वंदनार्थ खिवांदी गया था । तब से हमारा पत्र व्यवहार चालू हुआ । खिवांदी चातुर्मास बाद उनका विहार गुजरात की ओर हुआ ।

वि.सं. 2013 में पूज्यश्री आरिसा भवन-पालीताणा में विराजमान थे तब मैं वहां गया था और 10-12 दिन साथ में रहा था । उसके बाद उनका चातुर्मास लिंबडी में हुआ था ।

वि.सं. 2017 से 2021 तक पू.उपाध्यायश्री धर्मविजयजी म. की सेवा एवं समाधि हेतु पूज्य गुरुदेवश्री लुणावा में रहे थे, तब बाली से नजदीक होने से मेरा अनेक बार जाना-आना होता था ।

उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर पूरा लुणावा उनका भक्त हो गया था । पूज्यश्री की निश्रा में मुंडारा (राज.) में सुपुत्र अशोक की शादी के प्रसंग पर अष्टाह्निका महोत्सव रखा था ।

वि.सं. 2028 में उनका चातुर्मास जुनाडीसा में था, तब संगीतकार के रुप में मैं भी एक बार प्रोग्राम हेतु जुनाडीशा गया था, वे दो तिथि पक्ष के समुदाय के होने पर भी एक तिथि पक्ष के क्षेत्र में उनका चातुर्मास था । उनकी उदार मनोवृत्ति के कारण दोनों पक्ष के लोग उन्हें खूब चाहते थे ।

भिन्न समुदाय के महात्माओं के प्रति भी उनका खूब औचित्यपूर्ण व्यवहार रहता था–कर्जत व बदलापुर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के प्रसंग पर उन्होंने अन्य समुदाय के आचार्य आदि के साथ प्रतिष्ठा करवाई थी । उनके जीवन के अंतिम दिनों तक मेरा उनसे घनिष्ठ संबंध रहा ।

कामसेट में मै लगभग उनके अंतिम श्वास तक 15 दिनों तक साथ में रहा था । इस प्रकार वि.सं. 2008 से 2060 तक मेरा उनसे घनिष्ठ संबंध रहा ।

उनका मेरे और मेरे परिवार पर खूब उपकार रहा है । उनके संपर्क से मुझे जैन धर्म के विषय में बहुत कुछ सीखने को मिला था । उन्हीं के वजह से मेरा जीवन परिवर्तन हुआ था ।

उनके उपकारों को मैं कभी भूल नहीं सकता । उनका मैं रोज स्मरण करता हूँ । उनकी कृपा मुझ पर सदैव बरसती रहे, इसी अभिलाषा के साथ पूज्य गुरुदेवश्री के चरणों में कोटि कोटि वंदना !

शासन–प्रभावना

उनके पुण्य प्रभाव से उनकी तारक निश्रा में अनेकविध धार्मिक अनुष्ठान होते रहते थे । उपधान, उद्यापन, दीक्षा-महोत्सव, प्रतिष्ठा महोत्सवों की परंपरा चलती रहती थी ।

परमोपकारी गुरुदेव

कांतिलाल हिम्मतमलजी-कल्याण

मरुधररत्न पू.मु. श्री पुण्योदयविजयजी म.सा. का वि.सं. 2049 में जोगेश्वरी-मुंबई में सर्व प्रथम चातुर्मास था । पूज्यश्री के पुण्य प्रभाव को देखते हुए कल्याणवासियों के दिल में भी एक चातुर्मास कराने की भावना हुई ।

कल्याण से बाबुलालजी कपूरचंदजी एवं नैनमलजी फूलाजी के साथ मैं भी आगामी चातुर्मास की विनती के लिए पूज्यश्री के पास गया ।

हमारी भावना को देख पूज्यश्री ने 2049 के चातुर्मास की सम्मति प्रदान की ।

चातुर्मास प्रवेश के पूर्व पूज्यश्री से मेरा विशेष परिचय नहीं था । परंतु उनके चातुर्मास प्रवेश एवं सुबह-शाम नवकारसी का लाभ मुझे मिला, उसके बाद चातुर्मास में उनका विशेष परिचय हुआ । उनके उपदेश से ही हमारे परिवार में धर्म की वृद्धि हुई ।

उस समय मेरा गृह निर्माण का कार्य चल रहा था । गृह निर्माण में होनेवाली विराधना आदि के पापों से बचने के लिए उन्होंने प्रेरणा दी । जीवन में दूसरा घर मत बांधना ।'

उस चातुर्मास में कल्याण संघ में खूब सुंदर आराधना-तपश्चर्याएं हुई ।

उनके सदुपदेश से कल्याण में वर्षों बाद सामूहिक उपधान का आयोजन हुआ । जिसमें 125 आराधक जुडे । खूब सुंदर आराधनाएं हुई । उपधान के चढावे भी अच्छे हुए । प्रसंग प्रसंग पर मुझे भी उनकी सेवा का मौका मिलता रहा । संघ शासन सेवा की यत्किंचित भी दान आदि धर्म की आराधना हो रही है, यह सब उन्हीं की अदृश्य कृपा का फल है ।

गत वर्ष में संघ में पू. आचार्य भगवंतश्री के चातुर्मास व सामूहिक सिद्धितप कराने का लाभ मिला, यह सब उन्हीं की कृपादृष्टि का फल है ।

पू.मु. श्री पुण्योदयविजयजी म.

चातुर्मास सूचि

वर्ष क्रमांक	वि.सं.	चातुर्मास स्थल	प्रांत
1.	1995	कोल्हापूर	महाराष्ट्र
2.	1996	हुबली	कर्णाटक
3.	1997	रहमतपूर	महाराष्ट्र
4.	1998	खंभात	गुजरात
5.	1999	जामनगर	गुजरात
6.	2000	मांगरोल	गुजरात
7.	2001	अहमदाबाद	गुजरात
8.	2002	जामनगर	गुजरात
9.	2003	खंभात	गुजरात
10.	2004	खंभात	गुजरात
11.	2005	बोरसद	गुजरात
12.	2006	दहेगांव	गुजरात
13.	2007	पोसालिया	गुजरात
14.	2008	खिवांदी	गुजरात
15.	2009	श्रीकुंभवाडा	राजस्थान
16.	2010	लिंबडी	गुजराज
17.	2011	पोसालिया	राजस्थान
18.	2012	सावरकुंडला	गुजरात
19.	2013	धंधुका	गुजरात
20.	2014	नदियाद	गुजरात
21.	2015	खिवांदी	राजस्थान

वर्ष क्रमांक	वि.सं.	चातुर्मास स्थल	प्रांत
22.	2017	लुणावा	राजस्थान
23.	2018	सादडी	राजस्थान
24.	2019	लुणावा	राजस्थान
25.	2020	लुणावा	राजस्थान
26.	2021	लुणावा	राजस्थान
27.	2022	पोसालिया	राजस्थान
28.	2023	पोसालिया	राजस्थान
30.	2024	वडगांव	राजस्थान
31.	2025	नोवी	राजस्थान
32.	2026	पोसालिया	राजस्थान
33.	2027	जोयला	राजस्थान
34.	2028	जुनाडीसा	गुजरात
35.	2029	सिद्धपूर	गुजरात
36.	2030	सिद्धपूर	गुजरात
37.	2031	नोवी	राजस्थान
38.	2032	सिद्धपूर	गुजरात
39.	2033	पोसालिया	राजस्थान
40.	2034	शिवगंज	गुजरात
41.	2035	सिद्धपूर	गुजरात
42.	2036	शिवगंज	राजस्थान
43.	2037	नोवी	राजस्थान
44.	2038	खिवांदी	राजस्थान
45.	2039	पोसलिया	राजस्थान
46.	2040	खिवांदी	राजस्थान

वर्ष क्रमांक	वि.सं.	चातुर्मास स्थल	प्रांत
47.	2041	लकमावा	राजस्थान
48.	2042	पोसलिया	राजस्थान
49.	2043	पोसलिया	राजस्थान
50.	2044	धनापूरा	राजस्थान
51.	2045	शिवगंज	राजस्थान
52.	2046	सिद्धपूर	गुजरात
53.	2047	वीसनगर	गुजरात
54.	2048	जोगेश्वरी-मुंबई	महाराष्ट्र
55.	2049	कल्याण	महाराष्ट्र
56.	2050	माहिम	महाराष्ट्र
57.	2051	कर्जत	महाराष्ट्र
58.	2052	कामसेट	महाराष्ट्र
59.	2053	रेवदंडा	महाराष्ट्र
60.	2054	कर्जत	महाराष्ट्र
61.	2055	रेवदंडा	महाराष्ट्र
62.	2056	पूना-बिबवेवाडी	महाराष्ट्र
63.	2057	बदलापूर	महाराष्ट्र
64.	2058	कामसेट पुण्योदय धाम	महाराष्ट्र
65.	2059	कामसेट पुण्योदय धाम	महाराष्ट्र
66.	2060	कामसेट पुण्योदय धाम	महाराष्ट्र

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. का हिन्दी साहित्य

1. वात्सल्य के महासागर
2. सामायिक सूत्र विवेचना
3. चैत्यवन्दन सूत्र विवेचना
4. आलोचना सूत्र विवेचना
5. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र विवेचना
6. कर्मन् की गत न्यारी
7. आनन्दघन चौबीसी विवेचना
8. मानवता तब महक उठेगी
9. मानवता के दीप जलाएं
10. जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है
11. चेतन ! मोहनींद अब त्यागो
12. युवानो ! जागो
13. शांत सुधारस-हिन्दी विवेचना भाग-1
14. शांत सुधारस-हिन्दी विवेचना भाग-2
15. रिमझिम रिमझिम अमृत बरसे
16. मृत्यु की मंगल यात्रा
17. जीवन की मंगल यात्रा
18. महाभारत और हमारी संस्कृति-1
19. महाभारत और हमारी संस्कृति-2
20. तब चमक उठेगी युवा पीढी
21. The Light of Humanity
22. अंखियाँ प्रभुदर्शन की प्यासी
23. युवा चेतना
24. तब आंसू भी मोती बन जाते है
25. शीतल नहीं छाया रे.(गुजराती)
26. युवा संदेश
27. रामायण में संस्कृति का अमर सन्देश-1
28. रामायण में संस्कृति का अमर सन्देश-2
29. श्रावक जीवन-दर्शन
30. जीवन निर्माण
31. The Message for the Youth
32. यौवन-सुरक्षा विशेषांक
33. आनन्द की शोध
34. आग और पानी-भाग-1
35. आग और पानी-भाग-2
36. शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति)
37. सवाल आपके जवाब हमारे
38. जैन विज्ञान
39. आहार विज्ञान
40. How to live true life ?
41. भक्ति से मुक्ति (पांचवी आवृत्ति)
42. आओ ! प्रतिक्रमण करे (चौथी आवृत्ति)
43. प्रिय कहानियाँ
44. अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव
45. आओ ! श्रावक बने
46. गौतमस्वामी-जंबुस्वामी
47. जैनाचार विशेषांक
48. हंस श्राद्ध व्रत दीपिका
49. कर्म को नहीं शर्म
50. मनोहर कहानियाँ
51. मृत्यु-महोत्सव
52. Chaitya-Vandan Sootra
53. सफलता की सीढ़ियाँ
54. श्रमणाचार विशेषांक
55. विविध-देववंदन (चतुर्थ आवृत्ति)
56. नवपद प्रवचन
57. ऐतिहासिक कहानियाँ
58. तेजस्वी सितारें
59. सन्नारी विशेषांक
60. मिच्छामि दुक्कडम
61. Panch Pratikraman Sootra
62. जीवन ने तुं जीवी जाण (गुजराती)
63. आवो ! वार्ता कहुं (गुजराती)
64. अमृत की बुंदे
65. श्रीपाल मयणा
66. शंका और समाधान भाग-1
67. प्रवचनधारा
68. धरती तीरथ'री
69. क्षमापना
70. भगवान महावीर

71. आओ ! पौषध करें
72. प्रवचन मोती
73. प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह
74. श्रावक कर्तव्य-1
75. श्रावक कर्तव्य-2
76. कर्म नचाए नाच
77. माता-पिता
78. प्रवचन रत्न
79. आओ ! तत्वज्ञान सीखें
80. क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद
81. जिनशासन के ज्योतिर्धर
82. आहार : क्यों और कैसे ?
83. महावीर प्रभु का सचित्र जीवन
84. प्रभु दर्शन सुख संपदा
85. भाव श्रावक
86. महान ज्योतिर्धर
87. संतोषी नर-सदा सुखी
88. आओ ! पूजा पढाएँ !
89. शत्रुंजय की गौरव गाथा
90. चिंतन-मोती
91. प्रेरक-कहानियाँ
92. आई वडीलांचे उपकार
93. महासतियों का जीवन संदेश
94. श्रीमद् आनंदघनजी पद विवेचन
95. Duties towards Parents
96. चौदह गुणस्थान
97. पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन
98. मधुर कहानियाँ
99. पारस प्यारो लागे
100. बीसवीं सदी के महान् योगी
101. अमर-वाणी
102. कर्म विज्ञान
103. प्रवचन के बिखरे फूल
104. कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन
105. आदिनाथ-शांतिनाथ चरित्र
106. ब्रह्मचर्य
107. भाव सामायिक
108. राग म्हणजे आग (मराठी)
109. आओ ! उपधान-पौषध करें !
110. प्रभो ! मन-मंदिर पधारो
111. सरस कहानियाँ
112. महावीर वाणी
113. सदगुरु-उपासना
114. चिंतन रत्न
115. जैन पर्व-प्रवचन
116. नींव के पत्थर
117. विखुरलेले प्रवचन मोती
118. शंका-समाधान भाग-2
119. श्रीमद् प्रेमसूरीश्वरजी
120. भाव-चैत्यवंदन
121. Youth will shine then
122. नव तत्त्व-विवेचन
123. जीव विचार विवेचन
124. भव आलोचना
125. विविध-पूजाएँ
126. गुणवान् बनों
127. तीन-भाष्य
128. विविध-तपमाला
129. महान् चरित्र
130. आओ ! भावयात्रा करें
131. मंगल-स्मरण
132. भाव प्रतिक्रमण-1
133. भाव प्रतिक्रमण-2
134. श्रीपाल-रास और जीवन
135. दंड़क-विवेचन
136. आओ ! पर्युषण-प्रतिक्रमण करें
137. सुखी जीवन की चाबियाँ
138. पांच प्रवचन
139. सज्झायों का स्वाध्याय
140. वैराग्य शतक
141. गुणानुवाद
142. सरल कहानियाँ
143. सुख की खोज
144. आओ संस्कृत सीखें भाग-1
145. आओ संस्कृत सीखें भाग-2
146. आध्यात्मिक पत्र
147. शंका-समाधान (भाग-3)
148. जीवन शणगार प्रवचन
149. प्रात: स्मरणीय महापुरुष (भाग-1)
150. प्रात: स्मरणीय महापुरुष (भाग-2)
151. प्रात: स्मरणीय महासतियाँ (भाग-1)
152. प्रात: स्मरणीय महासतियाँ (भाग-2)

153. ध्यान साधना
154. श्रावक आचार दर्शक
155. अध्यात्माचा सुगंध (मराठी)
156. इन्द्रिय पराजय शतक
157. जैन-शब्द-कोष
158. नया दिन-नया संदेश
159. तीर्थ यात्रा
160. महामंत्र की साधना
161. अजातशत्रु अणगार
162. प्रेरक प्रसंग
163. The way of Metaphysical Life
164. आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1
165. आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2
166. आओ ! भाव यात्रा करें !! भाग-2
167. Pearls of Preaching
168. नवकार चिंतन
169. आओ ! दुर्ध्यान छोड़े !! भाग-1
170. आओ ! दुर्ध्यान छोड़े !! भाग-2
171. परम-तत्व की साधना भाग-1
172. रत्न-संदेश-भाग-1
173. गागर में सागर
174. रत्न-संदेश-भाग-2
175. My Parents
176. श्रावकाचार-प्रवचन-भाग-1
177. श्रावकाचार-प्रवचन-भाग-2
178. परम तत्त्व की साधना भाग-2
179. परम तत्त्व की साधना भाग-3
180. बाली चातुर्मास विशेषांक
181. उपधान स्मृति विशेषांक
182. नवपद आराधना
183. आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1
184. हेमचन्द्राचार्य और कुमारपाल
185. आई चे वात्सल्य
186. आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2
187. जैन संघ-व्यवस्था
188. चौबीस तीर्थंकर चरित्र-भाग-1
189. चौबीस तीर्थंकर चरित्र-भाग-2
190. संस्मरण
191. संबोह-सित्तरि (वैराग्य का अमृत कुंभ)
192. विवेकी बनों !
193. आत्म-उत्थान का मार्ग भाग-3
194. लघु संग्रहणी (जैन भूगोल)
195. समाधि-मृत्यु
196. कर्मग्रंथ भाग-2
197. कर्मग्रंथ भाग-3
198. आदर्श कहानियाँ
199. प्रवचन-वर्षा
200. अमृत रस का प्याला
201. महान् योगी पुरुष
202. बारह-चक्रवर्ती
203. प्रेरक-प्रवचन
204. पाँचवाँ-कर्मग्रंथ
205. छठा-कर्मग्रंथ
206. Celibacy
207. मंत्राधिराज प्रवचन सार
208. श्रमण-क्रिया के मुख्य सूत्र
209. मोक्ष-मार्ग के कदम
210. शंका समाधान भाग-4
211. व्यसन-मुक्ति
212. गणधर-संवाद
213. New Message for a New Day
214. चिंतन का अमृत-कुंभ
215. सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव-बलदेव
216. अचिंत्य चिंतामणि–श्री नवकार (भाग-1)
217. अचिंत्य चिंतामणि–श्री नवकार (भाग-2)
218. हार्दिक श्रद्धांजलि
219. सुखी जीवन के Mile-Stone
220. महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (1 से 9 तक)
221. महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (10 से 40 तक)
222. महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (41 से 57 तक)
223. महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (58 से 80 तक)
224. अर्हद् दिव्य-संदेश (दीक्षा-विशेषांक)
225. 'बेंगलोर' प्रवचन-मोती
226. श्री नमस्कार महामंत्र
227. महामंत्र की अनुप्रेक्षाएँ
228. आठ कर्म निवारण पूजाएं
229. तत्त्वार्थ-सूत्र (भाग-1)
230. तत्त्वार्थ-सूत्र (भाग-2)
231. वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी
232. वैराग्य-वाणी
233. सम्यग्दर्शन का सूर्योदय
234. जीवन झांकी

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर मरुधररत्न, पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित 234 पुस्तकों में से उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य	Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	चिंतन का अमृत-कुंभ	80/-	34.	शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति)	40/-
2.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-1)	100/-	35.	आओ संस्कृत सीखें भाग-1	150/-
3.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-2)	100/-	36.	प्रेरक-प्रवचन	80/-
4.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-3)	125/-	37.	दंडक सूत्र विवेचन	90/-
5.	पंच-प्रतिक्रमण (भाग-4)	135/-	38.	जीव विचार विवेचन	100/-
6.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	125/-	39.	गणधर-संवाद	80/-
7.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	85/-	40.	आओ ! उपधान पौषध करें !	55/-
8.	विविध-तपमाला	100/-	41.	नवपद आराधना	80/-
9.	विवेकी बनो	90/-	42.	पहला कर्मग्रंथ	100/-
10.	बीसवी सदी के महान योगी	300/-	43.	दूसरा-तीसरा कर्मग्रंथ	55/-
11.	परम-तत्व की साधना भाग-3	160/-	44.	संस्मरण	50/-
12.	प्रवचन-वर्षा	60/-	44.	भव आलोचना	10/-
13.	मोक्ष-मार्ग के कदम	120/-	46.	आध्यात्मिक पत्र	60/-
14.	आओ श्रावक बनें !	25/-	47.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1	125/-
15.	व्यसन-मुक्ति	100/-	48.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2	175/-
16.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-	49.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3	150/-
17.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (1 से 9)	300/-	50.	तीन भाष्य (हिन्दी विवेचन)	150/-
18.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (10 से 40)	275/-	51.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-
19.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (41 से 57)	275/-	52.	महामंत्र की अनुप्रेक्षाएँ	150/-
20.	महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा (58 से 80)	280/-	53.	आठ कर्म निवारण पूजाएं	200/-
21.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-	54.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-
22.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-	55.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-
23.	समाधि मृत्यु	80/-	56.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
24.	The Way of Metaphysical Life	60/-	57.	सज्झायों का स्वाध्याय	100/-
25.	Pearls of Preaching	60/-	58.	वैराग्य-वाणी	140/-
26.	New Message for a New Day	600/-	59.	सम्यग्दर्शन का सूर्योदय	160/-
27.	Celibacy	70/-	60.	लघु संग्रहणी	140/-
28.	Panch Pratikraman Sootra	100/-	61.	नवतत्त्व विवेचन	110/-
29.	श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र	160/-	62.	श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-
30.	अमृत रस का प्याला	300/-	63.	कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन	240/-
31.	ध्यान साधना	40/-	64.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
32.	आग और पानी-भाग-1-2	115/-	65.	जीवन झांकी	अमूल्य
33.	शांत सुधारस-हिन्दी -भाग-1-2	140/-			

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन,
Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002. Mobile : 8484848451 (only whatsapp)

प्रवचन देते हुए
मुनि श्री पुण्योदयविजयजी

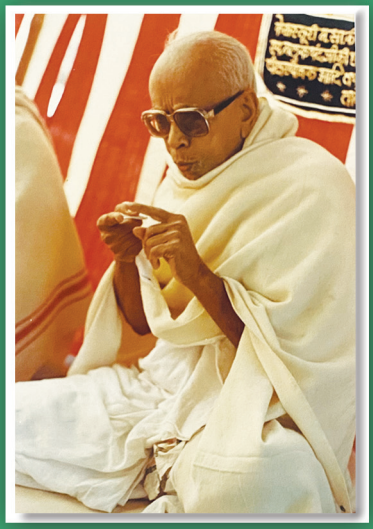

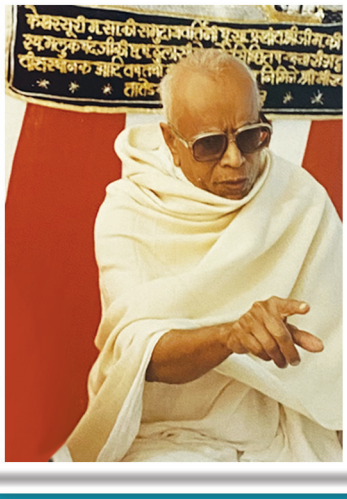

परमात्मा भक्ति करते हुए
मुनि श्री पुण्योदयविजयजी

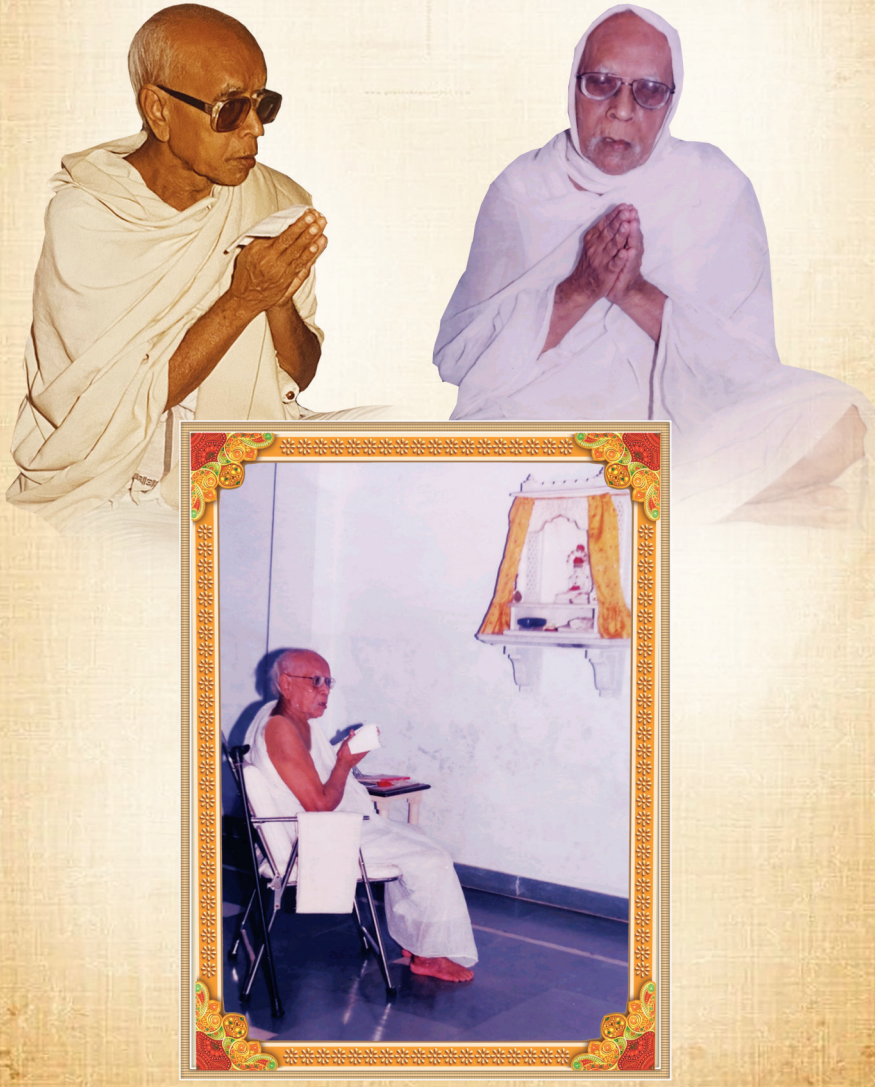

आशीर्वाद देते हुए
पूज्य मुनिश्री पुण्योदयविजयजी

कालधर्म के बाद
पूज्य मुनिश्री पुण्योदयविजयजी

चढावे प्रसंग पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी

कामसेट (महाराष्ट्र) में गुरुमूर्ति

जन्मभूमि पोसालिया (राज.) में गुरुमंदिर

प्रकाशन निमित्त

पू.मु.श्री पुण्योदयविजयजी म. की पुण्य स्मृति में सिद्धहस्त लेखक
पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा
से निर्मित 'श्री विमलपुण्यगिरि धाम' कामशेट, ता. मावळ, जि.पुणे में
मरुधर रत्न, पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.
एवं प्रवचनकार पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय युगचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
आदि की शुभ निश्रा में अंजन शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग

दि. 10-2-2023

परम पूज्य गुरुदेव पुण्योदयविजयजी म.सा. का बदलापुर श्री संघ पर
अनंत उपकार है । बदलापुर नगर के इतिहास का पहला चातुर्मास
परम पूज्य गुरुदेव पुण्योदयविजयजी म.सा. आदि ठाणा-2 का हुआ ।
पूरे संघ को एक साथ लाने में गुरुदेव ने अथक प्रयत्न किया ।
उनके प्रयास से बदलापुर में
भव्यातिभव्य प्राण प्रतिष्ठा संपन्न हुई ।
उनके जबरदस्त परिश्रम का ही
परिणाम है कि आज तक बदलापुर संघ
आज भी एक जुट
और शासन के प्रति समर्पित है ।

प्रकाशन सहयोगी

1. शा. रविंद्रकुमार भागचंदजी कितावत-बाली
2. शा. ताराचंदजी रिखबचंदजी नागोत्रा सोलंकी-नोवी
3. शा. पुखराजजी भीकाजी भंडारी-कोरटा तीर्थ
4. शा. सुरेशचंद्र छोगमलजी सिरोहिया-शिवगंज
5. शा. अमृतलालजी गणेशमलजी जैन-सांडेराव
6. श्रीमती लीलाबाई कुंदनमलजी रातडिया-सांडेराव
7. श्री जैन पारस मंडल-बदलापुर
8. शाह बाबूलालजी शेषमलजी सुराणा-सेवाड़ी
9. सौ. हसमुतिबेन बाबुलालजी सुराणा-सेवाड़ी
10. शा. जीवराज चंदनमलजी पिथानी-भारूंदा

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299